पत्र सूचना शाखा

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल ने भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित कुलपति सम्मेलन का उद्घाटन किया

लखनऊः 14 मार्च, 2015

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, श्री राम नाईक ने आज लखनऊ विश्वविद्यालय में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित कुलपति सम्मेलन में कहा कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की प्रमुख भूमिका होती है। छात्रों के भावी जीवन की रचना में विश्वविद्यालयीय शिक्षा महत्वपूर्ण होती है। ऐसे में शिक्षकों की कमी अहम मसला है। उच्च शिक्षा में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है, जो पढ़ाने में दिलचस्पी रखते हों। शिक्षक मन से काम करने की मानसिकता बनायें। कोचिंग की प्रवृत्ति बढ़ रही है जबकि विश्वविद्यालयों की कक्षाओं में छात्रों की उपस्थिति कम दिखाई देती है। कई शैक्षिक संस्थाओं में स्ववित्तपोषित अध्यापकों का शोषण होता है। विद्यार्थियों के बौद्धिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भी जोर दिया जाना चाहिये। महामना पं0 मदन मोहन मालवीय छात्रों को व्यक्तिगत रूप से प्रोत्साहित करते थे। ऐसे प्रोत्साहन का भाव आज के शिक्षकों एवं छात्रों के मध्य नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐसे कुशल शिक्षकों की जरूरत है, जिन्हें वास्तव में पढ़ाने की इच्छा हो।

श्री नाईक आज लखनऊ विश्वविद्यालय में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित कुलपति सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन उच्च शिक्षा को दिशा देने के लिये आवश्यक है। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि सम्मेलन के निष्कर्षों एवं निर्णयांे को केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं अन्य प्रदेशों के राज्यपालों को भी प्रस्तुत किया जाये, जिससे भावी नीति निर्धारण में सिफारिशों का समावेश किया जा सके।

राज्यपाल ने कहा कि वैश्विककरण की चुनौती के साथ बाजार की ताकत बढ़ गई है। शिक्षा का भी व्यापारीकरण हो गया है। उच्च शिक्षा सर्वसुलभ और सस्ती हो इस पर भी विचार करने की जरूरत है। उन्होंने उच्च शिक्षा के गिरते स्तर पर चिन्ता व्यक्त की। विश्व के 200 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी शिक्षण संस्थान नहीं है। पूर्व में तक्षशिला, नालंदा, उज्जैन जैसे विश्वविद्यालयों में विदेशों से छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे। विश्व में ज्ञान के क्षेत्र में परिवर्तन द्रुतगति से हो रहा है। नये-नये विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें विशेषकर विश्वविद्यालय स्तर पर बहुविधा तथा समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

श्री नाईक ने कहा कि उच्च शिक्षा में कई प्रकार की कठिनाइयाँ व चुनौतियाँ है, जिसका उन्हें अनुभव है। प्रदेश में 24 राजकीय विश्वविद्यालय हैं। राज्यपाल का पद ग्रहण करने के बाद उन्होंने विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से अलग-अलग भेंट कर चार मुद्दे जैसे कि प्रवेश, समयबद्ध परीक्षा, समय पर परिणाम तथा समय पर दीक्षान्त समारोह आयोजित किये जाने पर विशेष रूप से चर्चा की। उन्होंने बताया कि नकलविहीन परीक्षा के लिये सभी राजकीय विश्वविद्यालयों को निर्देश भेजे जा चुके हैं तथा 21 विश्वविद्यालयों के दीक्षान्त समारोह समय से सम्पन्न हो गये हैं।

इस अवसर पर भारतीय विश्वविद्यालय संघ के महासचिव, श्री फुरकान कमर ने सम्मेलन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही कुरूक्षेत्र में एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने, शोध का स्तर बढ़ाने तथा विश्वविद्यालयों को उत्कृष्टता का केन्द्र बनाये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने शिक्षकों के चयन और वेतन पर भी चर्चा कराये जाने की बात कही।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति, डा0एस0बी0 निमसे ने सम्मेलन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि इस सम्मेलन में दस राज्यों के कुलपति भाग ले रहे हैं। वैश्विककरण के दौर में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने गुणवत्तायुक्त शिक्षा की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि सामयिक आवश्यकताओं को देखते हुए पाठ्यक्रम में बदलाव होते रहना चाहिये।

प्रो0 अमरेन्द्र पाणि ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सम्मेलन में आगे की चर्चा के विषयों पर प्रकाश डाला।

---

ng Higher Education:
f State Universities
March 14-15, 2015
Hosted b